www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रमांक 2616
निबन्ध सं. ....
तारीख ....

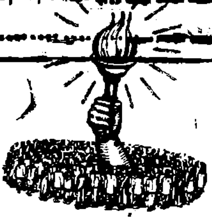

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

युग शिल्पी इन दिनों प्रज्ञा चक्र घुमायें

—ब्रह्मवर्चस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

युग शिल्पी इन दिनों -- प्रज्ञा--चक्र घुमायें

युग संधि की इस ऐतिहासिक वेला में प्रत्येक प्राणवान प्रज्ञापुत्रों को अपनी अग्रगामी भूमिका निभानी है। महाकाल का निमन्त्रण स्वीकार करना और युगधर्म निवाहना है। व्यस्तता और कृपणता पर अंकुश लगाना है। औसत भारतीय स्तर का निर्वाह अपनाना है और समय एवम् साधनों का एक महत्वपूर्ण अंश युग यज्ञ में यजन करना है। यह समय बगलें झांकने, बहाने ढूँढ़ने का नहीं साहस पूर्वक अग्रिम मोर्चे पर खड़े होने का है। वह उदाहरण इन्हीं दिनों प्रस्तुत करना है जिसका अनुकरण करके असंख्यों को प्राण प्रेरणा मिल सके। यह अलभ्य अवसर चूकने जैसा है नहीं।

गायत्री परिवार को अब स्वाध्याय मण्डलों के रूप में बदल दिया गया है ताकि विचार क्रान्ति–प्रज्ञा प्रसार अभियान का लक्ष्य विस्मृत न हो चले। गायत्री उपासना का महत्व यथा स्थान रखते हुए यह भुलाया नहीं जाना चाहिए कि जनमानस का परिष्कार साध्य और उपासना साधना है। नवयुग का आधार प्रज्ञा प्रतिष्ठापना है। उसे सम्पन्न करने का प्रथम उपाय स्वाध्याय और द्वितीय सत्संग है। इन्हें जप और यज्ञ से कम नहीं कुछ अधिक ही महत्व मिलना चाहिए। भ्रान्ति पनपने न पाये इसलिए संगठन का नाम स्वाध्याय प्रधान कर दिया गया है और उसे अब चुनावों पर निर्धारित न रख कर एक मन के लोगों की टोली मण्डली के रूप में विकसित किया गया है ताकि रोज की पार्टीबन्दी, खींचातानी एवम् चें-चें से छुटकारा मिले और कुछ करते धरते बन पड़े। अब संगठन छोटे-छोटे रहेंगे और उनका संचालन प्रज्ञापुत्र यानी छोटी-छोटी टोलियाँ, मंडलियाँ बनाकर करेंगे।

न्यूनतम जो करना है वह प्रज्ञा चक्र के रूप में प्रस्तुत है। यह हर भावनाशील के लिए व्यस्तता के बीच भी बन पड़ने योग्य है। समृद्ध

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से बादल—बादल से वर्षा वर्षा से जलाशय—जल प्रवाहों से समुद्र। यह जल चक्र है। बीज से अंकुर—अंकुर से पादप—पादपों पर फल—फल से बीज। यह वृक्ष चक्र है। धरती की उर्वरता से वनस्पति वनस्पति खाकर प्राणी-प्राणियों के मलमूत्र खाद से उर्वरता। यह उर्वरक चक्र है। जन्म से विकाश—विकाश से बुढ़ापा—बुढ़ापे से मरण—मरण से जन्म। यह जन्म मरण चक्र है। श्वांस चक्र, रक्त चक्र, आहार चक्र भी इसी प्रकार हैं। प्रज्ञापुत्रों द्वारा स्वाध्याय मंडल संचालन—संचालन से जन जागृति—जन जागृति से युगशक्ति—युगशक्ति से नव सृजन—नव सृजन के श्रेयाधिकारी प्रज्ञापुत्रों का हनुमान जैसा गौरव। यह प्रज्ञा चक्र है। एक बारज़ोर का धक्का मार देने पर यह सुदर्शन चक्र बनकर सौर मण्डल की तरह अपनी धुरी एवम् कक्षा में स्वयमेव घूमता रहेगा।

प्राणवान प्रज्ञापुत्रों को अपने एकाकी वर्चस्व की परीक्षा इन्हीं दिनों देनी है। एकाकी चलना है। साथ में एक मन के कुछ और लोग भी मिल सकें तो उन्हें भी टोली-मण्डली में सम्मिलित किया जा सकता है। "नौ मन तेल जुटने पर राधा का नाच ठने" इसकी प्रतीक्षा में एक क्षण भी नहीं गँवाया जाय। एकला चलो रे----- का गीत गुनगुनाते हुए सूर्य चन्द्र का अनुकरण करें और प्रज्ञा चक्र घुमाने का उत्तरदायित्व अपने निजी साहस पराक्रम के सहारे उठायें।

प्रज्ञा चक्र का उपक्रम इस प्रकार है :—

प्रत्येक प्रज्ञा पुत्र इन दिनों हजारी किसान की शपथ लेकर स्वाध्याय मण्डल का उद्यान अपने कार्यक्षेत्र में लगायें। उसका संस्थापक—संचालक बनें। इसके उपरान्त इन युग उद्यानों को अपने प्रभाव क्षेत्र में घूम-घूमकर लगाने बढ़ाने के लिए प्राण-प्रण से जुटा जाय।

स्वाध्याय मण्डलों के दो वर्ग हैं एक वे जिनमें बिना जन संपर्क साधे, घर बैठे ही प्रज्ञा अभियान के लिए सीमित क्षेत्र में कुछ करते रहा जा सकता है। इस वर्ग के लिए चालीस पैसा प्रतिदिन ज्ञानघट में जमा करें। उस राशि से हर महीने तीस की संख्या में छपने वाले प्रज्ञा फोल्डर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मंगाते रहें। अपने परिवार को, पड़ोसी मित्रों को पढ़ाते सुनाते रहें। इन दिनों पू० गुरुदेव एक प्रज्ञा फोल्डर हर दिन लिखने के उपरान्त ही जल ग्रहण करते हैं। इस अत्यंत प्राणवान साहित्य को स्वयम् नियमित रूप से पढ़ना और परिवार पड़ोस को पढ़ाते सुनाते रहने का श्रेय मिल जाता है। इतना करने की न्यूनतम आशा प्रत्येक प्रज्ञा परिजन से की गई है।

स्वाध्याय मण्डल का दूसरा वर्ग प्राणवान प्रतिभाओं द्वारा अपनाये जाने योग्य है। वरिष्ठ प्रज्ञा पुत्रों को इसकी जिम्मेदारी अपने कन्धों पर ओढ़नी चाहिए। उन्हें बिना इमारत का ज्ञानरथ प्रज्ञा संस्थान चलाना चाहिए। इन चल देवालयों को भी प्रज्ञापीठों के समतुल्य ही महत्वपूर्ण माना गया है।

ज्ञानरथ की धकेल गाड़ी बनाना, इसके लिए साहित्य मंगाना आवश्यक है। धकेल गाड़ी में एक हजार की लागत लगेगी और इतने का ही साहित्य भी उसके लिए चाहिए। दो हजार की पूंजी जुटाने के अतिरिक्त एक स्थाई कार्यकर्त्ता की नियुक्ति भी इसके लिए होनी चाहिए। पूरे या अधूरे समय का एक परिश्रमी मुखर कार्यकर्त्ता नियुक्त किया जाना चाहिए। रिटायर अथवा विद्यार्थी स्तर का परिश्रमी मुखर व्यक्ति इसके लिए स्थानीय ही ढूंढ़ा जाना चाहिए।

समझा जाता है कि आधे समय का कार्यकर्त्ता १५०) में और पूरे समय का ३००) में मिल जाना चाहिए। यह दिन में ज्ञानरथ चलाने की स्वाध्याय प्रक्रिया और रात्रि में जन्म दिन मनाने की स्लाइड प्रोजेक्टर दिखाने की प्रक्रिया साथ-साथ चलाता रह सकता है। जिस दिन रात्रि का कार्यक्रम हो उस दिन, दिन में उतना समय कम कर लिया जाय।

लोक मानस के परिष्कार और सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए दो उपाय उपचार अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं। (१) स्वाध्याय (२) सत्संग। स्वाध्याय की आवश्यकता प्रज्ञा साहित्य पढ़ाने, वापिस लेने तथा बेचने के दोनों ही उद्देश्य उस आधार पर पूरे होते रह सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरे सत्संग प्रयोजन को भी कम महत्व न दिया जाय। दो पहिए के सहारे गाड़ी चलने की बात ध्यान में रखी जाय। सत्संग प्रबंध के लिए स्लाइड प्रोजेक्टर, टेप रिकार्डर और लाउडस्पीकर की व्यवस्था होनी चाहिए। इन तीनों उपकरणों का सुयोग भी त्रिवेणी संगम की तरह है। स्वाध्याय के लिए ज्ञान रथ की तरह सत्संग के लिए भी तीनों उपकरण आवश्यक हैं।

ज्ञान रथ बनाने में धकेल गाड़ी और स्वाध्याय प्रक्रिया के लिए साहित्य। इनमें दो हजार की पूंजी लगती है। सत्संग की व्यवस्था के लिए स्लाइड प्रोजेक्टर, टेप रिकार्डर और लाउडस्पीकर तीनों उपकरण भी प्रायः दो हजार में मिल जाते हैं। इस प्रकार दोनो प्रयोजनों के लिए कुल मिलाकर चार हजार की पूंजी चाहिए। यह कहीं बाहर नहीं जाती। हाथ के नीचे ही रहती है। आवश्यकता समझी जाय तो बेंच कर वह पैसा कुछ ही घाटा देकर वापस भी लौट आता है। यह पूंजी कोई उदार-मना चाहे तो अपने पास से भी लगा सकता है। मित्र सहयोगियों की सहायता से जुटा सकता है।

इसके अतिरिक्त उपरोक्त पूंजी जुटाने के सर्व सुलभ दो उपाय हैं। एक यह कि स्मारिका प्रकाशित की जाय। समीपवर्ती व्यवसाइयों के बीस - तीस विज्ञापन लेने भर से इतना पैसा मिल जाता है कि उसमें प्रकाशन की लागत निकल सके और उपरोक्त आवश्यकता के लिए चार हजार की राशि बचाई जा सके।

दूसरा यह कि प्रज्ञा आयोजन सम्पन्न किया जाय। शान्तिकुञ्ज से युग संगीत और प्रज्ञा पुराण कथा की प्रचारक मंडली जीप गाड़ी मंगाई जाय। तीन दिन का समारोह गायत्री यज्ञ तथा चित्र प्रदर्शनी आयोजन रखा जाय। इसमें कुल खर्च एक हजार के लगभग आता है। भाग दौड़ करके इस आयोजन के लिए कुछ अधिक संचय कर लिया जाय तो उससे भी इतनी राशि बच सकती है जिससे ज्ञान रथ के स्वाध्याय एवं सत्संग साधन जुट सकें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

स्मारिका एवं आयोजन के दोनो ही प्रबन्ध कर लिए जायें तब तो चल प्रज्ञा संस्थान की समग्र आर्थिक व्यवस्था करने में किसी प्रकार का संदेह ही नहीं रह जाता ।

नियुक्त कार्यकर्त्ता को एक महीना शांतिकुञ्ज ट्रेनिंग के लिए भेज कर इस योग्य बना लिया जाय कि वह ज्ञान रथ चलाने, स्लाइड प्रोजेक्टर दिखाने टैप रिकार्डर सुनाने, जन्म दिन मनाने, यज्ञ कराने की सभी आवश्यकतायें पूरा कर सकें। साथ तो उसका फिर भी देते रहना होगा। अकेले नए आदमी पर सारा कार्य भार छोड़ कर निश्चिन्त नहीं रहा जा सकता ।

नियुक्त कार्यकर्त्ता के निर्वाह वेतन की व्यवस्था का एक ही उपाय है कि प्रभावित लोगों के जन्म दिन मनाये जायें । उस आयोजन का प्रबन्ध तथा व्यय संस्थान की ओर से किया जाय। उपस्थिति अच्छी रहे, प्रबन्ध शानदार हो तो उससे धारावाहिक ज्ञान गोष्ठियों का एक सुनियोजित सत्संग क्रम चल पड़ता है। साथ ही आयोजन कर्त्ता के यहां "ज्ञान घट" की स्थापना नितान्त सरलता पूर्वक सम्भव हो जाती है। यही जन्म दिवसोत्सव की दक्षिणा भी है।

बीस पैसा नित्य की राशि से ज्ञान घट का मासिक छै रुपया बनता है आधे समय के कार्यकर्त्ता का वेतन १५०) एवं पूरे समय का ३००) का आंका गया है। वही दिन में ज्ञान रथ घुमाने और रात्रि को जन्म दिन मनाने, स्लाइड प्रोजेक्टर दिखाने का कार्य कर लिया करेगा। इस वेतन के लिए छै रुपया मासिक वाले २५ या ५० ज्ञान घट स्थापित करने से काम चल जाता है। प्रयत्न करते रहने पर महीने में दो-चार जन्म दिवसोत्सव मनाने का प्रयत्न हो सकता है और उतने भर से नियुक्त कार्यकर्त्ता का निर्वाह वेतन निकलता रह सकता है। यों पुस्तक बिक्री से भी कुछ आमदनी हो सकती है और जिन्हें नियमित रूप से पढ़ने का चस्का लग जाय उनसे तीन रुपया जैसा कुछ मासिक पुस्तकालय शुल्क लेने का प्रबन्ध हो सकता है। हर दिन प्रज्ञा साहित्य मिलने के बदले उतना

शुल्क देना किसी के लिए भी कठिन नहीं पड़ना चाहिए। इन समस्त उपायों से एक कार्यकर्त्ता का निर्वाह खर्च निकलने लगेगा और एक असिस्टेन्ट मिल जाने पर कोई भी वरिष्ठ प्रज्ञा पुत्र अपने निजी प्रयास से सैंकड़ों स्थानीय विचारशीलों में नियमित रूप से प्राण चेतना भरते रहने में समर्थ हो सकता है।

जन्म दिवसोत्सव जब आये दिन मनाये जाते हैं और उन्हें एक सुव्यवस्थित प्रचार आन्दोलन का–सुनिश्चित संगठन का रूप मिलना है तो इसके लिए आवश्यक है कि स्वाध्याय मण्डल संचालक उसके लिए सभी आवश्यक उपकरण स्वयम् ही जुटा कर रखें। इसके लिए पाइप से बनी यज्ञशाला का ढाँचा, तानने का कपड़ा, झल्लर, पूजा की चौकी, हवन पद्धतियाँ, कलश, पञ्चपात्र, हवन पात्र, धूपदानी आदि सभी वस्तुएँ संजोकर रखी जायें। यह सारा समान दो सौ से भी कम में बन जाता है। यह पूंजी भी जन्म दिवसोत्सव योजना चलाने हेतु लगाने की आवश्यकता है। यह सारा बना बनाया सरंजाम शान्ति कुञ्ज हरिद्वार से प्राप्त किया जा सकता है।

समग्र योजना के लिए (१)ज्ञानरथ की धकेल गाड़ी (२)साहित्य (३)स्लाइड प्रोजेक्टर (४)टैप रिकार्डर (५) लाउड स्पीकर (६)जन्मदिन की यज्ञशाला (७) उपकरण आदि की आवश्यकता पड़ेगी। स्मारिका के लिए लेख एवम् छपाई का प्रबन्ध करने की आवश्यकता रहेगी। इन्हें अपने यहाँ या समीपवर्ती लोगों की सहायता से जुटाया जा सके तो और भी उत्तम है अन्यथा इन्हें बाजार से कहीं कम मूल्य में जुटाने के लिए शान्तिकुञ्ज का सहयोग भी प्राप्त किया जा सकता है।

प्रत्येक प्राणवान प्रज्ञा पुत्र अपनी योजनाओं, गतिविधियों, संभावनाओं एवम् सफलताओं का विवरण नियमित रूप से शान्ति कुञ्ज भेजते रहें। इसमें आलस्य न करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिग्रहण सं.
दिनांक

दीखने में छोटे नजर आने वाले ये छोटे-छोटे कार्यक्रम फलश्रुति की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। विचार क्रान्ति जैसा विराट सरंजाम जुटाने के लिए भारत जैसी परिस्थिति में इससे कम में बात नहीं बनती। युग परिवर्तन हमारा चरम लक्ष्य है तो क्रिया-कलाप अपने आस-पास से ही आरंभ करने होंगे। न्यूनतम के रूप में प्रस्तुत प्रज्ञाचक्र की यह परिधि हर भावनाशील परिजन को पार करनी ही होगी। स्वाध्याय सत्सङ्ग के युग्म से बनी यह क्रिया पद्धति जिन माध्यमों से चल सकती है, उनका जुगाड़ बिठाने के लिए एकाकी ही कैसे व्यवस्था बनाई जा सकती है, उसका प्रज्ञाचक्र एक माडल भर है। सहायक जुटाना, धन की व्यवस्था करना, जन्मदिवस हेतु यज्ञशाला खड़ी करना लगता कठिन है लेकिन जब करने पर जुझारू उतर ही आएँ तो है बहुत ही सरल।

प्रज्ञा संस्थान में गोष्ठी होगी, सब मिलकर निर्णय लेंगे, प्रस्ताव को मंजूरी मिलेगी तब काम आगे बढ़ेगा—ऐसा सोचने वालों को भूल जाना चाहिए कि कोई सक्रिय कार्यक्रम वास्तव में चल ही पड़ेगा। ऐसी व्यवस्था सरकारी कार्यालयों में, योजना आयोगों में होती है जहाँ प्रस्ताव मात्र कागज में पास किये जाते हैं। अब सूत्र संचालकों की दृष्टि में वही प्रज्ञा संस्थान है, जो एकाकी होते हुए भी क्रियाशील है। शादी-ब्याह आदि में कुछ ऐसे व्यक्ति देखे जाते हैं जो अकेले ही सारी व्यवस्था संभाल लेते हैं, सहयोगियों के माध्यम से सहकार द्वारा काम चला लेते हैं। इन्हें व्यवस्थापक की पदवी दी जा सकती है। ऐसी व्यवस्था जुटा सकने की क्षमता जिनमें भी होगी, वे समग्र योजना का चक्र स्वयं घुमाते हुए सारे कार्यक्रम सम्पन्न कर सकेंगे—प्रज्ञा आलोक को फैला सकने में समर्थ होंगे। आह्वान ऐसे ही लोगों से किया भी जा रहा है।

प्रत्येक प्राणवाण प्रज्ञापुत्र अपनी योजनाओं, गतिविधियों, संभावनाओं एवं सफलताओं का निवारण बिना आलस्य किए नियमित रूप से शान्ति कुञ्ज भेजते रहेंगे, ऐसी अपेक्षा है।

प्रका० मुद्रक:— युगान्तर चेतना प्रेस, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार। मूल्य :— ४० पैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org